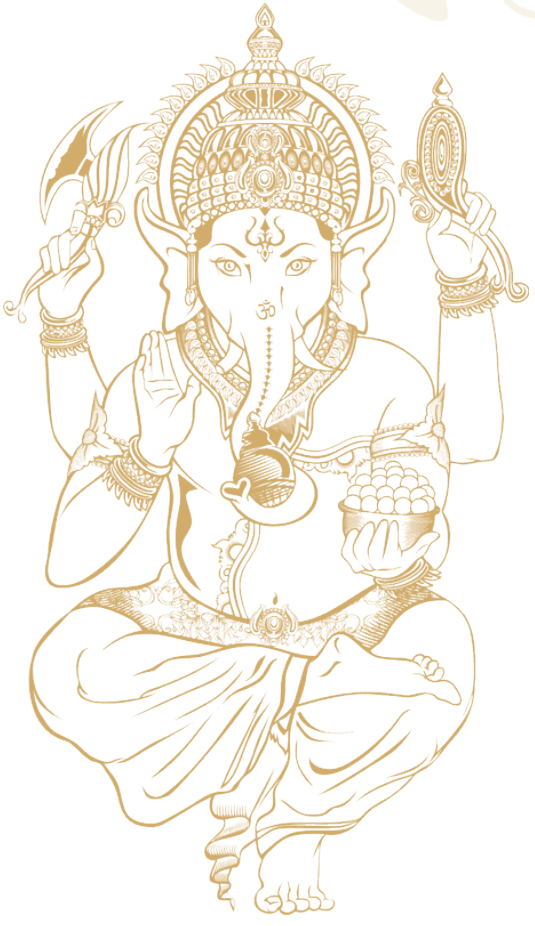

Ashutosh Mishra

Akanksha tripathi

Model: Web-FreeMatching

Order No: 120995704

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
18/09/1993	जन्म तिथि	07/12/1991
शनिवार	दिन	शनिवार
घंटे 19:55:00	जन्म समय	15:31:00 घंटे
घटी 35:22:58	जन्म समय(घटी)	22:20:44 घटी
India	देश	India
Basti	स्थान	Lucknow
26:48:00 उत्तर	अक्षांश	26:50:00 उत्तर
82:44:00 पूर्व	रेखांश	80:54:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे 00:00:56	स्थानिक संस्कार	-00:06:24 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
05:45:48	सूर्योदय	06:42:06
18:00:15	सूर्यास्त	17:13:10
23:46:25	चित्रपक्षीय अयनांश	23:44:56

विंशोत्तरी	अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी
राहु 17वर्ष 7मा 9दि	11:57:44	मेष	लग्न	मेष	24:36:10	केतु 4वर्ष 5मा 0दि
गुरु	01:54:34	कन्या	सूर्य	वृश्चि	21:02:35	चन्द्र
29/04/2011	06:57:25	तुला	चंद्र	धनु	04:55:13	08/05/2022
29/04/2027	00:32:07	तुला	मंगल	वृश्चि	12:11:19	07/05/2032
गुरु 16/06/2013	17:53:31	कन्या	बुध व	वृश्चि	23:55:31	चन्द्र 08/03/2023
शनि 28/12/2015	24:53:48	कन्या	गुरु	सिंह	20:00:39	मंगल 07/10/2023
बुध 04/04/2018	02:34:51	सिंह	शुक्र	तुला	07:32:23	राहु 07/04/2025
केतु 11/03/2019	01:06:36	कुंभ व	शनि	मक	09:34:57	गुरु 07/08/2026
शुक्र 09/11/2021	11:48:51	वृश्चि व	राहु व	धनु	16:07:31	शनि 08/03/2028
सूर्य 28/08/2022	11:48:51	वृष व	केतु व	मिथु	16:07:31	बुध 07/08/2029
चन्द्र 28/12/2023	24:29:15	धनु व	हर्ष	धनु	18:30:44	केतु 08/03/2030
मंगल 03/12/2024	24:38:21	धनु व	नेप	धनु	21:34:46	शुक्र 07/11/2031
राहु 29/04/2027	29:33:10	तुला	प्लूटो	तुला	27:30:03	सूर्य 07/05/2032

लग्न-चलित

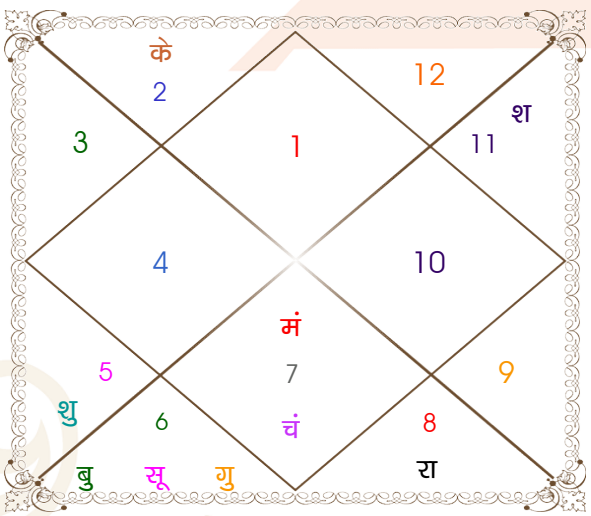

लग्न-चलित

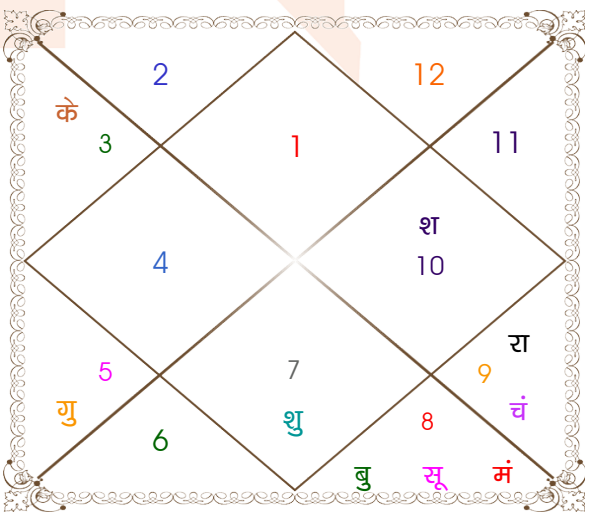

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	शूद्र	क्षत्रिय	1	0.00	--	जातीय कर्म
वश्य	मानव	मानव	2	2.00	--	स्वभाव
तारा	साधक	प्रत्यारि	3	1.50	--	भाग्य
योनि	महिष	श्वान	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	शुक्र	गुरु	5	0.50	--	आपसी सम्बन्ध
गण	देव	राक्षस	6	1.00	--	सामाजिकता
भकूट	तुला	धनु	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	अन्त्य	आद्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	22.00		

ीनजवी डपीतं का वर्ग मृग है तथा ।दर्ीं जतपचंजीप का वर्ग मृग है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार ीनजवी डपीतं और ।दर्ीं जतपचंजीप का मिलान शुभ है।

मंगलीक दोष मिलान

ीनजवी डपीतं मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है।

कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा।
न मंगली मंगल राहु योग।

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं चन्द्र ीनजवी डपीतं कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

।दर्ीं जतपचंजीप मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में अष्टम् भाव में स्थित है।

तनुधनुमदमायुर्लाभ व्ययगः कुजस्तु दाम्पत्यम्।
विघटयति तद् गृहेशो न विघटयति तुंगमित्रगेहेवा।।

यदि मंगल स्व राशि अथवा उच्च का हो तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल ।दर्ीं जतपचंजीप कि कुण्डली में स्वराशि में है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

शनिभौमोऽथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत्।
तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोषविनाशकृत्।।

यदि एक की कुंडली में जहां मंगल हो उन्हीं स्थानों पर दूसरे की कुंडली में प्रबल पाप ग्रह (राहु या शनि) हों तो मंगलीक दोष कट जाता है।

क्योंकि राहु ीनजवी डपीतं कि कुण्डली में अष्टम् भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि शनि ीनजवी डपीतं कि कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

ीनजवी डपीतं तथा ।ांदीं जतपचंजीप में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।